FA05

# दर्शनशास्त्र ( वैकल्पिक विषय )

( टेस्ट-II ) द्वितीय प्रश्नपत्र

( न्याय-वैशेषिक, वेदांत सम्प्रदाय, मीमांसा, अरविन्द )

DTVF/17–OPS-**P2**

*निर्धारित समय: तीन घंटे*
*Time allowed: Three Hours*

*अधिकतम अंक: 250*
*Maximum Marks: 250*

नाम (Name): MUKESH KUMAR LUWAYAT

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनाक (Test No. & Date): 02/30-07-2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

| 0 | 2 | 5 | 5 | 9 | 0 | 5 |
|---|---|---|---|---|---|---|

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): HINDI

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Mukesh

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

## Evaluation Analysis

| Introduction | Context | Language | Content | Conclusion | Structure | Current Link / Examples |
|---|---|---|---|---|---|---|
| D | C | C | C | D | C | — |

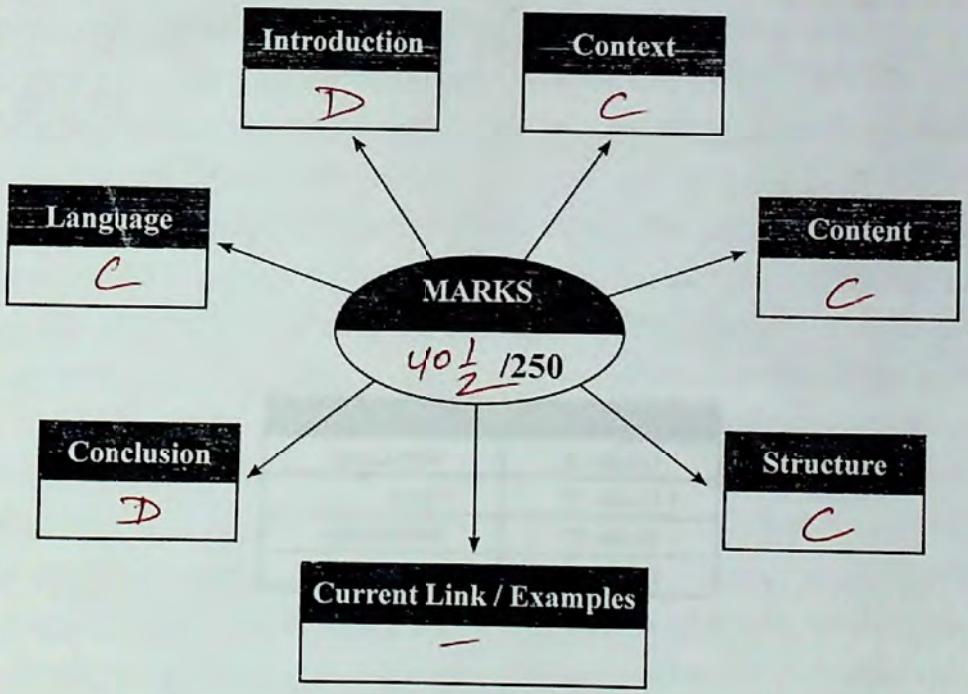

MARKS: 40½ /250



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

## व्यापक विश्लेषण / Macro Analysis

- लेखन में सुधार अपेक्षित है।
- तथ्यात्मक त्रुटियों से बचें।
- उत्तर की भूमिका और निष्कर्ष अवश्य लिखें।
- प्रत्येक उत्तर में संक्षेप में आलोचना और महत्व अवश्य लिखें।

| Grade Card | |
|---|---|
| Grade 'A' | Very Good |
| Grade 'B' | Good |
| Grade 'C' | Satisfactory |
| Grade 'D' | Poor |



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) न्याय का ईश्वर संबंधी विचार केवल ईश्वर की संभावना को सिद्ध करता है, न कि ईश्वर के यथार्थ अस्तित्त्व को। टिप्पणी कीजिये।

Nyaya's notion of God proves only the possibility of God, not the true existence of God. Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

न्याय दर्शन एक आस्तिक एवं ईश्वरवादी दर्शन है। न्याय, वैशेषिक के परमाणुवाद को स्वीकार करता है जिसके अनुसार ईश्वर जगत का निमित्त कारण है।

न्याय का ईश्वर सर्वज्ञ, प्रभु, सर्वशक्तिमान, कर्ता, संहर्ता, कर्मफलप्रदाता है। नैयायिकों ने ईश्वर की सिद्धि विभिन्न प्रकार के तर्कों द्वारा की है। यहाँ ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि हेतु निम्नलिखित आठ तर्क दिए गए हैं।

"कार्यायोजन धृत्यादे पदात् प्रत्ययतः श्रुतेः।
विश्व संख्या विशेषाच्च साध्यो विश्वविदव्ययः।"

संक्षेप में समझाएँ।

उपरोक्त के अलावा न्याय ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि हेतु 'अदृष्ट' आधारित नैतिक तर्क देते हैं।

परन्तु वेदांतियों के अनुसार न्याय, ईश्वर की सिद्धि हेतु तर्क एवं विचार का प्रयोग करता है। परन्तु तर्क एवं विचार से ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि नहीं हो सकती, यह केवल ईश्वर की संभावना मात्र को सिद्ध करता है क्योंकि


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि हेतु ईश्वर का साक्षात् अनुभव आवश्यक होता है। इसी कारण शंकर ब्रह्म के आत्मसाक्षात्कार एवं ब्रह्म को अपरोक्ष अनुभूतिगम्य मानते हैं।

एक सीमित अर्थ में नैयायिकों के तर्क विश्लेषणात्मक कथन प्रतीत होते हैं, अतः ये पुनरुक्ति मात्र हैं। तथ्यात्मक सत्यता केवल संश्लेषणात्मक कथनों की संभव है जो कि ईश्वर के संदर्भ में असंभव है क्योंकि ईश्वर इन्द्रियातीत है।

ध्यातव्य है कि वस्तुतः ईश्वर के अस्तित्व को न तो तर्कों द्वारा सत्यापित किया जा सकता है एवं न ही मिथ्यापित।

ईश्वर की सिद्धि तर्कों के माध्यम से नहीं हो सकती।

अनावश्यक — इसे धर्म दर्शन के प्रश्नपत्र में लिखें।

4½

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | 0.5 | 2 | 1.5 | 0.25 | - | 0.25 | |
| Grade | A | A | B | C | - | B | - |



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) त्रिपुटी प्रत्यक्षवाद और ज्ञाततावाद पर टिप्पणी लिखें।

Write comment on – Triputi Pratyakshvada (Tripple revelation) and Jyatatatada.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मीमांसा दर्शन में प्रभाकर ज्ञान के संदर्भ में त्रिपुटी प्रत्यक्षवाद का समर्थन करते थे। उनके मतानुसार वस्तु का प्रत्यक्ष होते ही (निर्विकल्पक) उसका ज्ञान प्राप्त हो जाता है क्योंकि प्रत्यक्ष की अवस्था में, ज्ञाता, प्रमाता (ज्ञान) एवं ज्ञेय तीनों एक साथ प्रकाशित होते हैं। तीनों को एक साथ प्रकाशित मानने के कारण प्रभाकर का यह मत त्रिपुटी प्रत्यक्षवाद कहलाता है।

वहीं दूसरी ओर कुमारिल भट्ट का इस संदर्भ में मत ज्ञाततावाद कहलाता है। इसके अनुसार प्रत्यक्ष की स्थिति में ज्ञाता, ज्ञेय व प्रमाता का एकसाथ प्रकाशन नहीं होता अपितु इस स्थिति में वस्तु का केवल भान मात्र होता है।

उत्तर की विषयवस्तु पर ध्यान दें। ज्ञातता नामक धर्म की उत्पत्ति होती है। जिससे ज्ञान होता है।

1½



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) सांख्य के 'पुरुष' और शंकराचार्य के 'साक्षी' की तुलना करें।

Compare 'Purusha' of Sankhya and Shankaracharya's 'Sakshi'.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सांख्य दर्शन द्वैतवादी दर्शन है। यह दो प्रकार के तत्वों की सत्ता स्वीकार करता है। जड़ प्रकृति एवं चेतन पुरुष।

सांख्य का पुरुष नित्य, शाश्वत, स्वतंत्र एवं अनेक है। पुरुष सत् है यह स्वतंत्र है। पुरुष के अपवर्ग रूपी प्रयोजन के कारण ही जगत् का विकास होता है। पुरुष सत्व, रज व तम गुणों से रहित है। अतः स्वभावतः निष्क्रिय है। पुरुष अनेक है।

ध्यातव्य है कि शंकर ने भी व्यावहारिक जगत् के स्तर पर 'साक्षी' की अवधारणा को स्वीकृत किया है। सांख्य के पुरुष की भाँति 'साक्षी' भी चेतन तत्व है। परंतु चूँकि शंकर पारमार्थिक दृष्टिकोण से ब्रह्म को ही एकमात्र सत् मानते हैं एवं जीव को ब्रह्म से अभिन्न मानते हैं। अतः साक्षी पारमार्थिक दृष्टिकोण से सत् न होकर केवल मिथ्या मात्र है। वह पुरुष की भाँति स्वतंत्र भी नहीं है। जहाँ सांख्य

दोनों तत्वमीमांसा से सम्बद्ध हैं।

सत्व सत्व

साक्षी और अंतःकरण सापेक्षिक हैं।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मैं पुरुष को आत्मा का समानार्थक माना है परन्तु शंकर के दर्शन में 'साक्षी' की स्थिति सांख्य के पुरुष के समकक्ष नहीं है।

अनावश्यक लेखन से बचें। प्रश्न के संदर्भ में ही उत्तर लिखें।

1/2

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | 0.25 | 0.5 | 0.5 | 0.25 | – | – | – |
| Grade | B | D | D | C | – | – | – |



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) पतंजलि का 'योग' जिस साधन के द्वारा 'मोक्ष' प्राप्ति का प्रयास करता है, वही साधन श्री अरविंद के लिये 'साध्य' हो जाता है। कथन के आलोक में दोनों योग साधनों की तुलना कीजिये।

The mean (saadhan) through which 'yoga' of Patanjali attempts to achieve 'Moksha' (salvation), the same mean, (instrument/Saadhan) becomes 'Saadhya' for Shri Aurobindo. Compare both the yoga instruments (Saadhan) in the light of this statement.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। यह केवल आत्म एवं अनात्म के भेद अथवा शारीरिक व मानसिक तत्वों के भेद का ज्ञान होने पर ही संभव है। योग-दर्शन में इस हेतु मनन, निदिध्यासन एवं अष्टांग योग की बात कही गई है।

इसके विपरीत अरविंदों का दर्शन 'पूर्ण योग' कहलाता है क्योंकि इसका लक्ष्य आत्म व अनात्म के भेद का ज्ञान न होकर इनको अंततः समन्वित करना है। पूर्ण योग के अनुसार परम तत्व जो कि सच्चिदानंद है, के स्तर पर जड़ व चेतन का कोई भेद नहीं है।

ध्यातव्य है कि योग दर्शन में 'ईश्वर' को केवल निमित्त कारण अर्थात पुरुष व प्रकृति के सानिध्य की व्याख्या करने हेतु स्वीकृत किया गया है। यहाँ परम तत्व 'ईश्वर' को विश्व का स्रष्टा, संहारकर्ता, पालनकर्ता नहीं माना गया है। वह मोक्ष की प्राप्ति का एक साधन मात्र है।

पतंजलि के योग में ईश्वर साधन है, जबकि श्री अरविन्द के योग में ईश्वर या सच्चिदानंद साध्य है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वहीं दूसरी ओर अरविंद के दर्शन में परम तत्व सच्चिदानंद स्वरूप है। वह जगत के विकास का आदि एवं अंत दोनों है। विकास की प्रक्रिया द्विरूपात्मक है। इसके दो रूप हैं प्रतिविकास एवं विकास। परमतत्व को उच्च स्तरों से निम्न स्तरों की ओर निमज्जन ही प्रतिविकास है। पुनः परमतत्व का निम्न स्तरों से उच्च स्तरों की ओर उत्थान विकास है। प्रतिविकास, विकास की पूर्वापेक्षा है।

विकास की प्रक्रिया वर्तमान में 'मानस' के स्तर पर है। विकास का लक्ष्य 'पूर्णयोग' की मदद से मानस को अतिमानस में परिवर्तित कर दिव्य जीवन की प्राप्ति है। योग की व्यक्तिगत मुक्ति के विरुद्ध अरविंद का पूर्ण योग सर्वमुक्ति की बात करता है। विकास प्रक्रिया जो कि उभयपरक व द्विरूपात्मक है का अंत सच्चिदानंद के स्तर तक उत्थान से होता है। अतः ईश्वर या परम तत्व जो पतंजलि के योग में मोक्ष का साधन मात्र है, यहाँ स्वयं एक साध्य भी बन जाता है।

दोनों योग आदर्शों के मध्य भेद का उल्लेख करें।

1/2

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | 0 | 0.5 | 0.5 | 0.25 | | 0.25 | – |
| Grade | D | D | D | B | – | D | – |



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) यद्यपि गुण तथा कर्म दोनों 'द्रव्य' पर निर्भरता की तलाश करते हैं, फिर भी वे वैशेषिक दर्शन में भिन्न प्रकृति प्रकट करते हैं। टिप्पणी करें। 15

Though quality and action both seek dependency on 'substance' still they manifest different nature in Vaisheshik philosophy. Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वैशेषिक दर्शन के अनुसार जिसका अस्तित्व है, जिसे नाम दिया जा सकता है एवं विशेष जाना जा सकता है, पदार्थ कहलाता है।
सत्ता के दृष्टिकोण से वैशेषिक दर्शन में 7 पदार्थ स्वीकृत है। द्रव्य, गुण व कर्म उनके से प्रथम तीन भाव पदार्थ है।
वैशेषिकों ने द्रव्य को परिभाषित करते हुए कहा है:-
" क्रिया गुणवत समवायिकारणम् द्रव्यलक्षणम्"
अर्थात् जो क्रिया (कर्म) व गुण का आधार है एवं कार्यों का समवायी कारण है, वह द्रव्य है।
द्रव्य स्वतंत्र है परन्तु गुण एवं कर्म अपने अस्तित्व हेतु द्रव्य पर आश्रित है।
हालांकि कर्म व गुण द्रव्य पर आश्रित है परन्तु उनमें कुछ समानताओं के अलावा महत्वपूर्ण अंतर भी है।

समानताएं:-
(i) दोनों को वैशेषिक दर्शन में स्वतंत्र पदार्थ माना गया है।
(ii) दोनों द्रव्य पर आश्रित है।
(iii) दोनों गुणों से रहित है।
(iv) दोनों अपने कार्य का समवायी कारण नहीं है।

?

अनावश्यक

असमानताएं
(i) गुण कर्मशून्य एवं निष्क्रिय है। कर्मशून्य होने के कारण गुण संयोग एवं वियोग का


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

का साक्षात कारण नहीं है।

इसके विपरीत द्रव्य सक्रिय है। फलतः संयोग एवं वियोग का साक्षात कारण है।

(ii) गुण कार्य का ~~समवायी कारण नहीं~~ असमवायी कारण है। उदाहरणतः पट के निर्माण में तंतु का रंग।
इसके विपरीत कर्म, सक्रिय होने के कारण कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(iii) कर्म मूर्त द्रव्यों (पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल) का गतिशील व्यापार है। द्रव्यों में सक्रियता इसी की वजह से आती है।

(iv) सांख्य दर्शन में गुणों के गुण माने गए हैं, जबकि वैशेषिक में गुणों के गुण स्वीकृत नहीं है।

प्रश्न उठता है कि यदि गुण व कर्म दोनों द्रव्य पर आश्रित है तो उन्हें स्वतंत्र पदार्थ क्यों माना जाए। वैशेषिकों के अनुसार चूंकि इन्हें जाना जा सकता है, नाम दिया जा सकता है। अतः ये स्वतंत्र पदार्थ है।

मूल्यांकन

वस्तुतः वैशेषिकों की पदार्थ की व्याख्या के अनुरूप केवल द्रव्य को ही पदार्थ मानना संगत है। गुण व कर्म को पदार्थ मानना संगत नहीं है क्योंकि ये अस्तित्व हेतु पराश्रित/परतंत्र है।

गुण और कर्म की द्रव्य पर निर्भरता बताते हुए आलोचना कीजिए।

2½


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) अभाव के ज्ञान के मुद्दे पर भारतीय दार्शनिकों द्वारा प्रतिपादित तर्क-वितर्क पर प्रकाश डालिये। 15

Highlight the arguments argued by Indian philosophers on the issue of knowledge of non-existence. 15

किसी विशेष वस्तु की, किसी विशेष समय में, किसी विशेष स्थान पर अनुपस्थिति ही अभाव है।

भारतीय दर्शन में वैशेषिकों द्वारा अभाव को स्वतंत्र पदार्थ माना गया है। वैशेषिकों के अनुसार अभाव का ज्ञान अनुमान प्रमाण से होता है। -

ध्यातव्य है कि विभिन्न भारतीय दार्शनिकों द्वारा अभाव के ज्ञान को विभिन्न प्रमाणों द्वारा माना है। इस संदर्भ में प्रतिपादित तर्क-वितर्क निम्न है।

(1) न्याय दर्शन में अभाव का ज्ञान विशेषण-विशेष्य भाव सन्निकर्ष नामक प्रत्यक्ष से माना गया है। नैयायिकों के अनुसार जब हम किसी स्थान का प्रत्यक्ष करते हैं तो केवल उस स्थान पर उपस्थित विशेषताओं का ही प्रत्यक्ष नहीं करते अपितु वहाँ पर अनुपस्थित विशेषताओं का प्रत्यक्ष भी कर लेते हैं। उदाहरणतः "यह स्थान अभी घट की अनुपस्थिति से युक्त है"।

मीमांसकों ने न्याय के उपरोक्त मत का

वैशेषिक ज्ञानमीमांसा माना अनुमान ही


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

निषेध किया है क्योंकि प्रत्यक्ष हेतु इंद्रिय का पदार्थ के साथ सन्निकर्ष आवश्यक होता है, चूंकि विशेषण विशेष्य भाव सन्निकर्ष में घट की अनुपस्थिति की स्थिति में पदार्थ से सन्निकर्ष नहीं हो पाता, अतः प्रत्यक्ष से अभाव का ज्ञान प्राप्त होता है, इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

(ii) नैयायिकों ने अभाव का ज्ञान अनुमान प्रमाण से माना है। परन्तु वेदान्तियों एवं कुमारिल भट्ट के अनुसार इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि अनुमान हेतु व्याप्ति-वाक्य का होना आवश्यक है। अभाव व अनुपस्थिति में व्याप्ति संबंध असंभव है, अतः अनुमान से अभाव का ज्ञान नहीं हो सकता।

वस्तुतः वेदान्तियों एवं कुमारिल भट्ट द्वारा अभाव की व्याख्या हेतु अनुपलब्धि को एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्वीकार किया गया है।

(iii) बौद्ध दर्शन के विज्ञानवाद के अनुसार अभाव का वास्तव में अस्तित्व नहीं है। अभाव एक मानसिक संरचना मात्र है।

निष्कर्षतः अभाव के ज्ञान के संदर्भ में भारतीय

बौद्धों ने अभाव को ज्ञानमीमांसीय रूप से माना है, जिसको अनुमान प्रमाण से ही जाना जाता है।


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

दर्शन में मतैक्य का अभाव है, फिर भी इस संदर्भ में शंकर व कुमारिल भट्ट का मत सर्वाधिक संगत माना जा सकता है।

3½

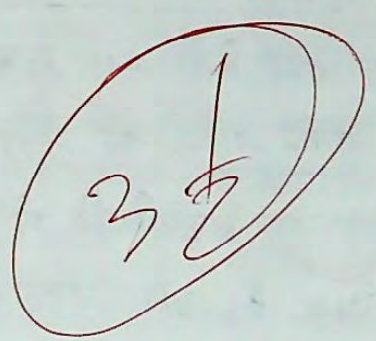

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | 0.25 | 1.5 | 1 | 0.25 | — | 0.5 | – |
| Grade | B | B | C | C | – | A | – |



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## खण्ड - B / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दें: $10 \times 5 = 50$

Answer each of the following in about 150 words:

(a) अनुमान प्रमाण का 'पचावयव' पाश्चात्य अनुमान वाक्य से किस प्रकार भिन्न है?

How is the five membered syllogism (Panchavayava) of inference proof (anuman praman) differ from western inference sentence?

भारतीय दर्शन में नैयायिकों ने परार्थानुमान में 5 वाक्यों का होना आवश्यक माना है जिन्हें 'पंचावयव' कहा जाता है। परार्थानुमान में अनुमान का स्वरूप निम्न प्रकार का होता है:-

पंचावयव के प्रत्येक अवयव को परिभाषित करें।

(i) पर्वत पर आग है। (प्रतिज्ञा) . . . . . विशेष
(ii) क्योंकि पर्वत पर धुँआ है।
(iii) जहाँ जहाँ धुँआ है, वहाँ वहाँ आग है। उदाहरणत: रसोईघर में। (उदाहरण सहित व्याप्ति वाक्य) . . . . सामान्य
(iv) पर्वत पर धुँआ है। (उपनय)
(v) अत: पर्वत पर आग है। (उपमिति) . . . . . विशेष

वहीं दूसरी ओर पाश्चात्य अनुमान निगमनात्मक होता है। यहाँ 5 के बजाय केवल 3 वाक्यों का होना आवश्यक होता है, ये है:-

(i) साध्य वाक्य (Major Premise)
(ii) पक्ष वाक्य (Minor Premise)
(iii) निष्कर्ष (Conclusion)

ध्यातव्य है कि
(i) जहाँ पाश्चात्य अनुमान केवल आकारिक [formal proof) होता है वहाँ नैयायिकों का अनुमान वास्तविक होता है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ii) पाश्चात्य अनुमान में उदाहरण द्वारा सिद्धि नहीं होती। अतः वास्तविकता के बजाय आकारिकता होती है। वहीं परार्थानुमान में उदाहरण द्वारा सिद्धि होने के कारण वास्तविकता होती है।

(iii) जहाँ पाश्चात्य अनुमान सामान्य से विशेष की ओर जाता है वहीं परार्थानुमान विशेष से सामान्य एवं पुनः सामान्य से विशेष की ओर जाता है।

(iv) अतः जहाँ पाश्चात्य अनुमान अनुमान में तर्कों को अलग-अलग रखता है वहीं परार्थानुमान इन 'पंचावयव' के माध्यम से उन्हें समन्वित करता है।

दोनों अनुमानों में समता यह है कि दोनों में क्रमिकता का होना आवश्यक होता है।

दोनों में Major term, Minor term और Middle term होते हैं।

4½

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | 0.5 | 2 | 1.5 | 0.25 | — | 0.25 | - |
| Grade | A | B | B | c | — | c | |


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(b) पंचविधभेद।

Panchavidhabheda.

माधवाचार्य का वेदांत दर्शन द्वैतवाद कहलाता है। जिसके अनुसार इस संसार में दो तरह के तत्व हैं। (i) स्वतंत्र तत्व व (ii) परतंत्र तत्व। ब्रह्म एकमात्र स्वतंत्र तत्व है, चित्त व अचित्त हालांकि ब्रह्म के पृथक व भिन्न सत् हैं परन्तु अपने अस्तित्व हेतु ब्रह्म अर्थात् ईश्वर पर आश्रित है।

चित. चित्त ✗

चित्त = मानसिक अवस्था को बताता है। (योग की चित्तभूमि)

चित = चैतन्य को बताता है।

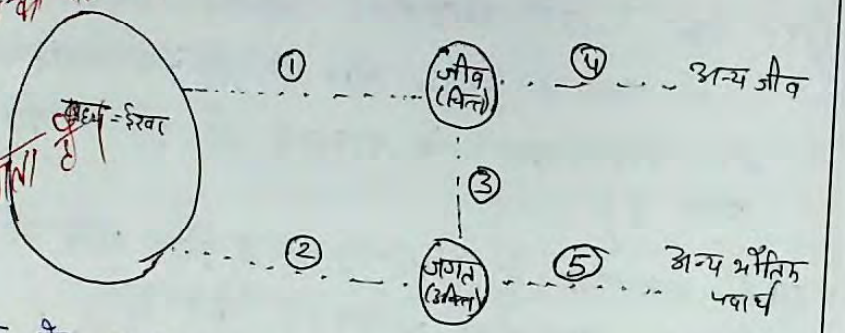




माधव के अनुसार ब्रह्म एवं जीव में अभेद (शंकर) संबंध नहीं है न ही ब्रह्म चित्त व अचित्त से विशिष्ट है (रामानुज) बल्कि ब्रह्म व चित्त एवं अचित्त में 5 प्रकार के भेद पाये जाते हैं जिन्हें पंचविधभेद कहते हैं। ये हैं -

(i) ब्रह्म व जीव (चित्त) का भेद ✓
(ii) ब्रह्म - जगत (अचित्त) भेद ✓
(iii) चित्त - अचित्त भेद ✓
(iv) एक जीव का अन्य जीवों से [illegible] भेद
(v) एक भौतिक पदार्थ का अन्य भौतिक पदार्थों से भेद।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

माधवाचार्य के अनुसार चूँकि हम व्यवहार में इन भेदों का अनुभव करते हैं, अतः ये भेद सत् हैं।

ध्यातव्य है कि माधव का पंचविधभेद दार्शनिक दृष्टिकोण से युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता है क्योंकि शंकर के अनुसार जो इस जगत में एकता के बजाय विविधता व नानात्व ढूँढता है, वह यहीं सांसारिक चक्र में पड़ा रहता है।

हालांकि माधव का पंचविधभेद, व्यावहारिक दृष्टि से प्रासंगिक है।

भेदों को स्पष्ट भी करें।

3

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | 0.5 | 1 | 0.5 | 0.25 | — | 0.25 | ✓ |
| Grade | A | C | D | C | - | C | - |



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) क्या न्याय वैशेषिक परमाणुवाद को स्वीकार करके जड़वाद का समर्थक हो जाता है?

Does Nyaya – Vaisheshika become a proponent of materialism after accepting the atomism?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

न्याय - वैशेषिकों का सृष्टि संबंधी मत परमाणुवाद कहलाता है क्योंकि न्याय - वैशेषिकों ने जगत का विकास 4 मूल भौतिक तत्वों पृथ्वी, अग्नि, वायु व जल के परमाणुओं से माना है।

जड़वाद क्यों प्रतीत होता है? स्पष्ट करें

हालांकि प्रथमदृष्टया न्याय - वैशेषिक का जगत संबंधी मत परमाणुवाद भौतिक तत्वों से जगत का विकास मानने के जड़वाद का समर्थक प्रतीत होता है परंतु यह केवल आंशिक सत्य है क्योंकि

(i) न्याय वैशेषिक भौतिक परमाणुओं को सृष्टि का केवल उपादान कारण मानते हैं। न्याय - वैशेषिकों ने परमाणुओं को नित्य, शाश्वत, निष्क्रिय एवं निरवयव माना है।

चूँकि परमाणु निष्क्रिय एवं गतिहीन है अतः उनसे स्वतः जगत की उत्पत्ति नहीं हो सकती। वैशेषिकों के अनुसार निमित्त कारण के रूप में ईश्वर इन परमाणुओं में गति उत्पन्न कर विश्व की सृष्टि में सहायता करता है।

(ii) भौतिक पदार्थों के साथ - साथ न्याय - वैशेषिकों


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

ने नित्य, शाश्वत, विभु आत्मा व परमात्मा (ईश्वर) को भी अस्तित्व माना है। पुन: वैशेषिक दर्शन में मन को द्रव्य माना है।

इसी प्रकार वैशेषिक परमाणुवाद केवल भौतिक या जड़वादी न होकर आध्यात्मिक है क्योंकि यह चेतन तत्व ईश्वर की सत्ता स्वीकार करता है।

सूक्ष्म परमाणुओं को भी स्वीकार किया अनुमानगम्य

(iii) वैशेषिकों का परमाणुवाद डीमोक्रीटस के जड़वादी परमाणुवाद से निम्न रूपों में भिन्न है :-

- डीमोक्रीटस परमाणुओं को स्वत: गतिशील व सक्रिय मानता है, वैशेषिक नहीं।
- डीमोक्रीटस निमित्त कारण के रूप में ईश्वर को स्वीकार नहीं करता।

स्पष्ट है कि डीमोक्रीटस के शुद्ध जड़वादी परमाणुवाद से भिन्न वैशेषिकों का परमाणुवाद अंशत जड़वाद व अंशत: आध्यात्मिक है।

3

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | 0.25 | 1 | 1 | 0.25 | — | 0.5 | ✓ |
| Grade | B | C | C | C | - | A | - |



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) न्याय के उपमान प्रमाण की मीमांसा के उपमान प्रमाण से तुलना कीजिये।

Compare the comparison proof of Nyaya with comparison proof of Mimansa.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय दर्शन में नैयायिकों व मीमांसकों दोनों ने उपमान का स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है। परंतु दोनों की उपमान की व्याख्या में पर्याप्त अंतर है।

क) न्याय का उपमान :- न्याय मतानुसार सिद्ध वस्तु (उदा. गाय) की सादृश्यता के आधार पर असिद्ध वस्तु (उदा. नीलगाय) का ज्ञान प्राप्त करना ही उपमान है।

उदाहरणतः हमने नीलगाय का प्रत्यक्ष नहीं किया हुआ है जब हम जंगल में जाते है तो गाय के सदृश्य नीलगाय को देखकर गाय का स्मरण कर उसकी सादृश्यता के आधार पर नीलगाय का ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार न्याय दर्शन में उपमान का स्वरूप "नीलगाय, गाय के समान है" के रूप में होता है।

ख) मीमांसा का उपमान :-

मीमांसकों के अनुसार नैयायिकों का उपमान प्रमाण अवैध है क्योंकि यह प्रत्यक्ष,

उपमान प्रमाण को परिभाषित करते हुए उत्तर प्रारम्भ करें। प्रसिद्ध अप्रसिद्ध

मीमांसा ... संख्या ... मानते। आपने नहीं। सादृश्य ... 3



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अनुमान व शब्द पर आधारित है।

नैयायिकों का उपमान का स्वरूप निम्न है:-

"दृष्ट वस्तु (नीलगाय) स्मृत वस्तु (गाय) के समान है"।

यह प्रत्यक्ष पर आधारित है क्योंकि दृष्ट नीलगाय का ज्ञान प्राप्त किया जा रहा है। यह एक प्रकार का अनुमान है क्योंकि "नीलगाय, गाय के समान है" एक प्रकार की व्याप्ति है। पुनः यह शब्द प्रमाण आधारित है क्योंकि नीलगाय की गाय से सादृश्यता का ज्ञान विश्वसनीय व्यक्ति से प्राप्त होता है।

मीमांसकों के अनुसार उपमान का स्वरूप न्याय के उपरोक्त कथन से भिन्न होकर निम्न है:-

"स्मृत वस्तु (गाय) दृष्ट वस्तु (नीलगाय) के समान है"।

निष्कर्षतः मीमांसक स्मृत की सादृश्यता दृष्ट से करते हैं जबकि न्याय-वैशेषिक दृष्ट की स्मृत से सादृश्यता को ही अनुमान मानते हैं।

मीमांसक उपमान को संज्ञा-संज्ञि सम्बन्ध मानते। आप्त पुरुष की आवश्यकता नहीं। सादृश्य ज्ञान है उपमिति प्रमा

3½

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | 0.25 | 1.5 | 1 | 0.25 | - | 0.25 | - |
| Grade | B | B | C | C | - | C | |



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) पंचीकरण।

Panchikaran

इन्द्रिय का पदार्थ के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान ही प्रत्यक्ष है।
यहाँ इन्द्रिय से आशय जिह्वा, आँख, नाक, कर्ण एवं त्वचा से है इन पाँचों इन्द्रियों से प्राप्त होने वाले इन्द्रिय प्रत्यक्ष को पंचीकरण की संज्ञा दी जाती है। ये है
(i) जिह्वा से स्वाद
(ii) आँख से रूप
(iii) नाक से गंध
(iv) कर्ण से शब्द
(v) त्वचा से स्पर्श
ध्यातव्य है कि पंचीकरण का प्रत्यक्ष प्रमाण में व्यापक महत्व है। किसी भी प्रकार के प्रत्यक्ष को कहीं न कहीं उपरोक्त में से किसी एक का उपयोग करना पड़ता है।

प्रश्न के संदर्भ में उत्तर दें।

(C)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) माया संबंधी मत के विरुद्ध रामानुज के तर्कों का परीक्षण कीजिये। 20

Examine Ramanuj's arguments against Maya related views. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शंकर के दर्शन में माया को ईश्वर की शक्ति माना गया है। ईश्वर माया के द्वारा ही जगत् की सृष्टि करता है।

रामानुज माया संबंधी शंकर के मत के विरुद्ध निम्न तर्क प्रस्तुत करता है।

(i) आश्रयानुपपत्ति :- शंकर ईश्वर को माया का आश्रय मानता है। रामानुज मतानुसार यदि ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान है तो वह अंधकार स्वरूप माया का आश्रय नहीं हो सकता। पुनः यदि ईश्वर अंधकार स्वरूप माया का आश्रय है तो फिर उसे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, दयालु नहीं माना जा सकता।

प्रत्युत्तर :- वेदान्तियों के अनुसार जिस प्रकार जादूगर अपने जादू से प्रभावित नहीं होता उसी प्रकार ईश्वर भी माया से प्रभावित नहीं होता।

(ii) तिरोधानानुपपत्ति :- रामानुज मतानुसार यदि ब्रह्म स्वप्रकाश्य एवं सर्वशक्तिमान है तो अंधकाररूपी माया अविद्या द्वारा इसका तिरोधान नहीं कर सकती, यदि माया ब्रह्म का तिरोधान करती है तो ब्रह्म को स्वप्रकाश्य, सर्वशक्तिमान नहीं माना जा सकता।

प्रत्युत्तर - वेदान्तियों के अनुसार जिस प्रकार बादल, सूर्य को ढक देते हैं, परन्तु इससे सूर्य की शक्ति का ह्रास नहीं होता। ठीक उसी प्रकार माया भी ब्रह्म को ढक देती है।

(iii) स्वरूपानुपपत्ति :- शंकर माया को अनिर्वचनीय मानते हैं। रामानुज के अनुसार माया



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोई भी तत्व या तो सत् हो सकता है या असत् । ब्रह्म ~~माया को~~ को अनिर्वचनीय नहीं माना जा सकता।

(IV) प्रमाणिय अनुपपत्ति :- रामानुज के मतानुसार माया को प्रामाण्य असिद्ध है।

(V) अनिर्वचनीयानुपपत्ति

(VI) निवर्तकानुपपत्ति

(VII) निवृत्यानुपपत्ति

ध्यातव्य है कि जिस संदर्भ में शंकर ने अपने दर्शन में माया की व्याख्या करने का प्रयास किया है, उससे भिन्न संदर्भ में रामानुज ने माया का खंडन करने का प्रयास किया है। शंकर के दर्शन में ईश्वर की माया शक्ति सम्पूर्ण जगत का आधार है। शंकर पारमार्थिक दृष्टिकोण से ईश्वर, जगत व माया को असत्/मिथ्या मानते हैं। क्योंकि परमार्थ के स्तर पर ब्रह्म ही एकमात्र सत् है।

4



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) श्री अरविंद के विकासवाद और डार्विन के विकासवाद की तुलना करें। 15

Compare evolution of Shri Aurobindo and Darvin. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

श्री अरविंद का विकासवाद पूर्ण अद्वैत (Integral monism) कहलाता है। अरविंद का विकासवाद जहाँ जगत के विकास की आध्यात्मिक व्याख्या है वहीं डार्विन का विकासवाद जगत के विकास की यांत्रिक, जड़वादी एवं वैज्ञानिक व्याख्या है।

श्री अरविंद के अनुसार परम तत्व सच्चिदानन्द स्वरूप है। सच्चिदानंद विकासवाद का आदि एवं अंत दोनों है। विकास की प्रक्रिया उभयपक्ष एवं द्विपक्षात्मक है। इसके दो रूप हैं – (i) प्रतिविकास (ii) विकास

(i) सच्चिदानंद का उच्च स्तरों से निम्नतर स्तरों में निमज्जन ही प्रतिविकास है। अरविंद इसे "पूर्ण चेतना का अज्ञान के स्तर में निमज्जन" (plung of spirits into ignorance" की संज्ञा देते हैं। यह अज्ञानता




श्री अरविंद का विकासवाद

के स्तर में हुई प्रवृत्ति है।

(ii) पुनः प्रतिविकास की प्रक्रिया की समाप्ति के

अप्रश्न के स्तर के सन्दर्भ में अनावश्यक



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

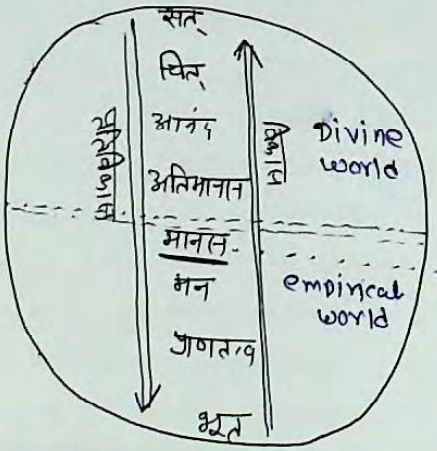

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पश्चात् पूर्ण चेतना का निम्न स्तरों से उच्च स्तरों में उत्थान ही विकास है। अरविंद इसे "पूर्ण-चेतना (सच्चिदानंद) की अपने स्वरूप में वापसी" (Spirit's return to itself) की संज्ञा देते हैं।

प्रतिविकास, विकास की पूर्वपीठिका है। प्रतिविकास के बिना विकास असंभव है।

अरविंद के दर्शन का लक्ष्य "मानस" (विकास प्रक्रिया का अंगभूत) को अतिमानस में परिवर्तित कर दिव्य-जीवन की स्थापना करना है। विकास की इस प्रक्रिया में स्थिरता एवं गतिशीलता लाने हेतु "पूर्ण योग" का पालन आवश्यक है।

ध्यातव्य है कि अरविंद का उपरोक्त विकासवादी दर्शन अनेक स्तर पर डार्विन के विकासवाद से भिन्न है:-

(i) डार्विन का विकासवाद जड़तत्व से जगत की उत्पत्ति मानता है।
इसके विपरीत जैसा कि चित्र से स्पष्ट है अरविंद के दर्शन में परमतत्व अर्थात् सच्चिदानंद, विकास प्रक्रिया का आदि एवं अंत दोनों है।

(ii) डार्विन का विकासवाद जड़वादी एवं यंत्रवादी है। यह जगत के उद्भव में कोई प्रयोजन नहीं मानता। इसके विपरीत अरविंद का दर्शन



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आध्यात्मिक है। यह परम तत्व के रूप में सच्चिदानंद को स्वीकार करता है।

पुनः अरविंद का दर्शन प्रयोजनवादी है। यहाँ विकासवाद का लक्ष्य मानस का अतिमानस में परिवर्तित कर "दिव्य जीवन" की स्थापना करना है।

उत्तर में सटीकता ... मॉडल उत्तर

(iv) डार्विन के विकासवाद में 'मुक्ति' जैसा तत्व या लक्ष्य अनुपस्थित है जबकि अरविंद का विकासवाद अतिमानस के स्तर पर सर्वमुक्ति की बात करता है।

(v) डार्विन का विकासवाद संघर्ष एवं योग्यतम के वरण (survival of the fittest) का सिद्धांत मानता है, जबकि अरविंद का विकासवाद सभी प्रकार के जीवों व वृत्तियों को समन्वित करते हुए सभी को एक साथ अतिमानस के रूप में परिवर्तित कर सर्वकल्याण पर आधारित है।

ध्यातव्य है कि डार्विन का विकासवाद एक वैज्ञानिक सिद्धांत है जबकि अरविंद के विकासवाद की आलोचना में कहा जाता है कि अरविंद का दर्शन मानवीय स्वानुभव के साथ किया गया बौद्धिक प्रयास मात्र है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | | | | | | | |
| Grade | | | | | | | |


Copyright – Drishti The Vision Foundation

(c) शब्द का कोई निश्चित सामान्य अर्थ नहीं होता बल्कि उसका अर्थ संदर्भ पर निर्भर करता है। इस संबंध में प्रभाकर मत की विवेचना करें और इसका कुमारिल विचार से अंतर स्पष्ट करें। 15

There is no definite meaning of the word, but its meaning depends on the context. Discuss Prabhakar's opinion in this regard and explain the difference with Kumaril also. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मीमांसा दर्शन में वाक्यार्थ-बोध के संदर्भ में प्रभाकर व कुमारिल भट्ट के मतों में पर्याप्त अंतर है।

प्रभाकर का वाक्यार्थ बोध के संदर्भ में मत 'अभिहितान्वयवाद' कहलाता है। प्रभाकर के अनुसार वाक्य का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता बल्कि वाक्य का अर्थ वस्तुतः उसके अलग-अलग शब्दों के अर्थ का योग मात्र है। पुनः शब्दों का भी कोई सामान्य अर्थ नहीं होता बल्कि उनका अर्थ उनके संदर्भ पर निर्भर करता है। ध्यातव्य है कि प्रभाकर का उपरोक्त विचार समकालीन पाश्चात्य दर्शन में विट्गेंस्टाइन के भाषा के उपयोग एवं अर्थ सिद्धांत से मिलता जुलता है। विट्गेंस्टाइन भी शब्द का अर्थ उसके उपयोग पर आधारित मानते हैं।

इसके विपरीत कुमारिल भट्ट के अनुसार



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। कुमारिल भट्ट का इस संदर्भ में मत अभिहितान्वयवाद कहलाता है। कुमारिल भट्ट के अनुसार शब्द का कोई प्रथम स्वतंत्र अर्थ नहीं होता अपितु वाक्यार्थ बोध सम्पूर्ण वाक्य का अर्थ होता है न कि अलग एक-एक शब्द के अर्थ का जोड़।

निश्चित शब्द के अर्थ के संदर्भ में शंकर का मत ज्यादा युक्तिसंगत एवं व्यावहारिक है क्योंकि शब्द का एक निश्चित अर्थ मानने पर कई प्रकार की व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वस्तुतः शब्द का अर्थ उसके संदर्भ व उपयोग पर ही निर्भर करता है। पाश्चात्य दार्शनिक विट्गेंस्टीन ने भी ऐसा ही माना है।

उत्तर की विषयवस्तु को सुदृढ़ करें

2



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (a) व्याप्ति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए इसके ज्ञान संबंधी अवधारणाओं की चर्चा करें। साथ में न्याय के इस मत का मूल्यांकन चार्वाक द्वारा दी गई आलोचना के प्रकाश में करने का प्रयास करें? 20

By clarifying the nature of 'Vyapti', discuss its knowledge related concepts. Also try to evaluate this opinion of Nyaya in the light of criticism given by charvaka. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~भाग~~ भारतीय दर्शन में चार्वाक के अलावा सभी प्रमुख दर्शनों द्वारा अनुमान को एक स्वतंत्र प्रमाण माना गया है।

अनुमान का शाब्दिक अर्थ होता है ~~कि~~ - पश्चात ज्ञान। अर्थात पूर्व ज्ञान के आधार पर, एवं उसके पश्चात प्राप्त होने वाला ज्ञान अनुमान है। पूर्व ज्ञान से आशय हेतु की पक्षधर्मिता व व्याप्ति ज्ञान से है।

व्याप्ति अनुमान का तार्किक आधार एवं प्राण है। व्याप्ति हेतु एवं साध्य में मध्य अनिवार्य, सामान्य, सार्वभौम, अनौपाधिक, अव्यभिचारी संबंध है। स्पष्ट है कि अनुमान ~~के~~ ज्ञान हेतु हेतु एवं साध्य के संबंध का ज्ञान होना आवश्यक होता है। इसी कारण बिना व्याप्ति ज्ञान के अनुमान असंभव होता है। ?

व्याप्ति के 2 प्रकार हैं:-

(i) समव्याप्ति - हेतु ~~एवं~~ साध्य में समान विस्तार, समव्याप्ति है। उदाहरणतः जो ज्ञेय है, वह प्रमेय है। ज्ञेय = प्रमेय

(ii) विषमव्याप्ति - यहाँ ~~हेतु~~ साध्य को ~~साध्य~~ विस्तार हेतु से व्यापक होता है। आग (साध्य) धुआँ (हेतु)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नैयायिकों ने विभिन्न तर्कों के माध्यम से व्याप्ति-ज्ञान को सिद्ध किया है। ये हैं:-

(I) अन्वय - हेतु के होने से साध्य का भी होना अन्वय है।

उदाहरणतः जहाँ जहाँ धुँआ है, वहाँ वहाँ आग है।

(ii) व्यतिरेक - साध्य के ना होने पर हेतु का न होना व्यतिरेक है।

उदाहरणः जहाँ आग नहीं है, वहाँ धुँआ भी नहीं है।

(iii) व्यभिचाराग्रह - व्याप्ति ज्ञान हेतु हेतु एवं साध्य में एकांतिक संबंध होना आवश्यक होता है।

(IV) उपाधिनिरास - हेतु एवं साध्य के मध्य शर्तरहित संबंध होने पर ही व्याप्ति ज्ञान संभव है। यदि हेतु व साध्य का संबंध शर्त के अधीन है तो उसे व्याप्ति वाक्य नहीं माना जा सकता। उदाहरणतः जहाँ-जहाँ आग है, वहां वहां धुँआ है, व्याप्ति वाक्य नहीं हो सकता क्योंकि धुँआ हेतु जलावन का गीला होना आवश्यक होता है।

(V) तर्क - व्याप्ति की सिद्धि तर्क के माध्यम



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

से भी संभव है। इस हेतु व्याप्ति-वाक्य के विरोधी कथन में व्यावहारिक व्याघात दिखाकर व्याप्ति की सिद्धि की जाती है।




I (Square of Opposition) O कुछ जगह जहाँ धुआँ है, वहाँ आग नहीं है।

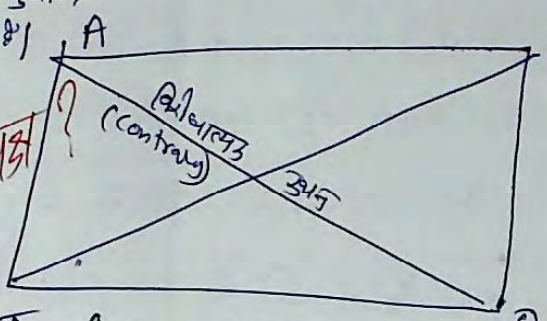

यहाँ अगर कथन A को असत्य माना जाए तो O को अवश्य सत्य मानना पड़ेगा। परन्तु O को सत्य मानने पर कारण कार्य नियम का खंडन होगा। अतः O असत्य है, एवं व्याप्ति वाक्य A सत्य है।

मूल्यांकन - चार्वाक मतानुसार व्याप्ति की सिद्धि किसी भी प्रकार से निश्चयात्मक तरीके से नहीं की जा सकती। क्योंकि प्रत्यक्ष से व्याप्ति की सिद्धि करने पर अवैध सामान्यीकरण दोष, अनुमान से करने पर चक्रक दोष व अनुमान की स्वतंत्रता खंडित, शब्द से करने पर पुनः आत्माश्रय दोष, कारण कार्य नियम से भी असंभव क्योंकि कारणता नियम स्वयं एक प्रकार की व्याप्ति है। स्पष्ट है कि चूँकि व्याप्ति की सिद्धि निश्चयात्मक तरीके से नहीं हो सकती। अतः अनुमान संभाविक है।

परंतु, चार्वाक के इस मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि चार्वाक स्वयं अनुमान के खंडन में अनुमान की मदद लेते हैं। पुनः चार्वाक तर्क व विचार का प्रयोग अनुमान के खंडन हेतु करते हैं, जो कि अभौतिक है। वस्तुतः व्याप्ति अनुमान का तार्किक आधार व प्राण है। अनुमान प्रमाण व्यवहार में सबसे व्यापक प्रमाण है।

| | Introduction | Context | Content | Language | Current Link / Examples | Conclusion | Error |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Marks | 0.5 | 2 | 1.5 | 0.5 | - | 0.5 | — |
| Grade | B | B | B | C | — | C | — |



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(b) रामानुज का 'धर्मभूतज्ञान'- टिप्पणी 15

'Dharmabhutjyan' of Ramanuja – comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

रामानुज का दर्शन विशिष्टाद्वैतवाद कहलाता है। रामानुज के मतानुसार ब्रह्म चित् एवं अचित् से विशिष्ट है। चित् व अचित् हालांकि परस्पर भिन्न, पृथक एवं स्वतंत्र है परन्तु अपने अस्तित्व हेतु ईश्वर पर निर्भर है।

रामानुज मतानुसार जीव का अपने को ईश्वर से भिन्न समझना ही बंधन है। रामानुज मुक्ति हेतु भक्ति व ज्ञान दोनों को आवश्यक मानते है। रामानुज मतानुसार अपवर्ग या मुक्ति हेतु धर्मभूतज्ञान ही आवश्यक है। धर्मभूतज्ञान हेतु रामानुज श्रुति को आवश्यक मानते है। रामानुज के मतानुसार श्रुति आधारित ज्ञान ही धर्मभूतज्ञान है।

आदर्श उत्तर देखें

2



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

# दर्शनशास्त्र (वैकल्पिक विषय)

## (टेस्ट-II) द्वितीय प्रश्नपत्र

## (न्याय-वैशेषिक, वेदांत सम्प्रदाय, मीमांसा, अरविन्द)

निर्धारित समय: तीन घंटे
*Time Allowed: Three Hours*

अधिकतम अंक : 250
*Maximum Marks : 250*

### प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

**कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:**

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी भाषा में ही मुद्रित हैं।

**परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।**

प्रश्न संख्या 1 और 5 **अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

### QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed only in **HINDI** Language.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*



*Copyright – Drishti The Vision Foundation*